षष्ठ अध्याय

लोकचित्रण ।

षष्ठ अध्याय

....

लो क चि त्र ण

लोक चित्रण

शिवभारत में कवि ने तत्कालीन समाज एवं संस्कृति के चित्रण में अधिक रुचि नहीं दिखाई है । कवि का उद्देश्य काव्य नायक शिवाजी एवं उसके पितामह मालो जी तथा पिता शाह जी के चारित्रिक गुणों का उल्लेख करना है। तत्सम्बन्धी प्रभूत सामग्री में ही व्यस्त कवि को तत्कालीन लोक में प्रचलित रीति रिवाज़, रहन-सहन, खान-पान एवं संस्कृति के विषय में कुछ पृथक से कहने का अवसर नहीं मिला है फिर भी शिवभारत में विस्तृत फलक से अप्रत्यक्ष रूप से लोक चित्रण भी अनुस्यूत है । इस ग्रन्थ में हमें लगभग 1530 से लेकर 1660 तक अर्थात् 30 वर्ष तक के समाज का वर्णन प्राप्त होता है । शिवभारत के समय में पूर्वी भाग में युद्ध होते रहते थे जिनके कारण लोक जीवन में अत्यधिक अस्थिरता आ गई थी । इस अस्थिरता से मुक्ति दिलाने का प्रयास शिवाजी ने किया । पूर्वी भाग की अपेक्षा पश्चिमी भाग के लोक जीवन में अधिक अस्थिरता नहीं थी, किन्तु यहाँ पर विदेशियों ने अपना स्थापत्य कर लिया था फिर भी सह्याद्रि के पूर्व में जितना आतंक था पश्चिम में उतना नहीं था । इसका मुख्य कारण यह था कि सह्याद्रि के पश्चिम में सेना को प्रवेश करना अत्यधिक कठिन था । पर्वतों के पथरीले व संकरी रास्तों में सेना सरलता से प्रवेश नहीं कर पाती थी । इसलिए इस प्रदेश पर आक्रमण करते हुए शत्रु डरता था । शिवभारत में इसका अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया गया है । जब शाइस्ताखान की सेना ने सह्याद्रि से नीचे उतरना प्रारम्भ किया तो पर्वतीय मार्ग इतना पतला था कि केवल एक ही व्यक्ति एक बार में निकल सकता था । ऐसे उस मार्ग से यवन एक-एक कर उतरने लगे ।[1] यह वन का प्रदेश ऐसा था जहाँ पर वायु

---

1. शिवभारत अध्याय 23, पृ0 33-34 , श्लो0 65-67

भी नहीं चल रही थी तथा यवन सैनिक उस महावन में बिना सोच-विचार किए प्रवेश कर गए ।[1] वन्य प्रदेश होने के कारण ही शिवाजी शाइस्ताखान की इतनी विशाल सेना का पराभव कर सका । इस प्रकार शिवाजी ने पर्वतीय किलों तथा पर्वतीय सँकरी मार्गों का आश्रय लेकर मुगलों की विशाल सेना का पराभव कर दिया । शिवभारत कालीन लोक जीवन अस्थिर था लगातार युद्ध होते रहते थे । निरन्तर होने वाले इन युद्धों के कारण ही उस समय की सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं थी अर्थात उस समय का लोक जीवन अस्थिर था ।

अस समय के लोक जीवन में अनेक प्रकार के अन्धविश्वास तथा शकुन अपशकुनों का वर्णन मिलता है जैसे जिस रात्रि को मुस्तुफाखान शाह जी को पकड़ने का षड्यन्त्र बना रहा था उसी समय शाह जी के शिविर में घोड़े रोने लगे, हाथी करुण शब्द करने लगे, अचानक वायु मण्डल बनाती चलने लगी, बिना बादलों के वृष्टि तथा ओले गिरने लगे, कुत्ते ऊपर मुँह करके रोने लगे अत्यादि ये सब अपशकुन बातें होने लगीं ।[2]

इसी प्रकार जब अफजलखान शिवाजी से युद्ध के लिए प्रस्थान करता है तो उसी समय अपने पंख हिलाते हुए, चीखते हुए तथा बाईं ओर जाने वाले कौओं ने बता दिया कि उसका प्रयास व्यर्थ है । दोपहर में भी सूर्य की किरणें अस्पष्ट हो गईं, अन्तरिक्ष जलने लगा, दिशाएँ धूसर हो गईं , अचानक बड़ी उल्का आसमान से गिर गई, बिना बादलों के आकाश में बिजली चमकने लगी । पूर्व दिशा का आश्रय लेने वाली सियारियाँ चिल्लाने लगीं । उसकी {अफजलखानकी} ध्वजा का डण्डा टूट गया । पत्थरों के साथ धूल की वर्षा करने वाली हवा भी उल्टी चलने लगी तथा वाहन भी ठीक नहीं चल रहे थे ।[3] ये सब अपशकुन सूचक बातें अफ़ज़लखान के प्रस्थान के समय होने लगीं ।

---

1. शिवभारत, अध्याय 23 , श्लो० 70 , पृ० 84
2. शिवभारत, अध्याय 11 , श्लो० 41-46, पृ० 31
3. शिवभारत, अध्याय 17 , श्लो० 60-64, पृ० 52

इस प्रकार इन शकुन-अपशकुन में विश्वास के साथ ही साथ ज्योतिष विद्या में भी लोगों की पूर्ण आस्था थी । सभी नवीन कार्यों का प्रारम्भ मुहूर्त में किया जाता था । ज्योतिषियों की भविष्यवाणी पर लोगों को अत्यधिक विश्वास था किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले ज्योतिषी से उसका मुहूर्त निकलवाया जाता था । तभी तो अफजलखान ज्योतिषी के बताए हुए समयानुसार ही शिवाजी से युद्ध के लिए प्रस्थान करता है ।[1] इससे यह ज्ञात होता है कि उस समय लोक जीवन में ज्योतिष विद्या का प्रचलन था ।

शिवभारत में क्रीत पुत्र[2] का उल्लेख मिलता है, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय में दास प्रथा का प्रचलन था ।

शिवभारत में अनेक प्रकार के संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है जैसे जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, विवाह तथा अन्त्येष्टि आदि ।

मालवर्मा ने अपने पुत्र का जातकर्म[3] संस्कार किया तथा दान में बड़े-बड़े मोती, प्रवाल, रत्न, अलंकार, स्वर्ण, स्वर्ण के वस्त्र, गाय, घोड़े हाथी अत्यादि दिये ।[4]

शिवाजी का भी जातकर्म संस्कार किया गया ।[5]

शिवभारत में नामकरण संस्कार का भी उल्लेख प्राप्त होता है । माल वर्मा ने अपने पुत्र का नामकरण[6] किया । मालवर्मा के दूसरे पुत्र का नाम सिद्धोत्तक[7]

---

1. शिवभारत, अध्याय 17, श्लो0 59, पृ0 52
2. बर्बर; खेलकर्णस्य प्राप्तो यः क्रीतपुत्राम् । शिवभारत अध्याय, 17, श्लो0 53, पृ0 51
3. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो 30, पृ0 4
4. शिवभारत ,अध्याय 1, श्लो0 84,85 ,पृ0 4
5. शिवभारत, अध्याय 6, श्लो0 39, पृ0 16
6. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 86, पृ0 4
7. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 89, पृ0 4

अर्थात सिद्धों द्वारा बनाया गया रखा गया ।

अन्नप्राशन नामक संस्कार का भी वर्णन मिलता है शिवाजी का अन्न-प्राशन संस्कार किया गया ।[1]

इस प्रकार शिवभारत में जातकर्म, नामकरण अन्नप्राशन आदि संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है । इन्हीं के साथ-2 विवाह नामक संस्कार का भी वर्णन प्राप्त होता है । इसमें हमें विशेष रूप से ब्राह्म विवाह का ही रूप दिखाई देता है। यादवराज ने मालोजीराज के पुत्र शाह जी के साथ जो श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त था, अपनी पुत्री जिजू का दक्षिणा के साथ विवाह सम्पन्न किया ।[2] यद्यपि इस समय प्राचीन संस्कार-व्यवस्था प्राय: समाप्त ही हो गई थी ।

शिवभारत में हमें वर्ण व्यवस्था का भी वर्णन देखने को मिलता है यद्यपि उस समय वर्ण-व्यवस्था प्राय: उत्सन्न हो गई थी फिर भी नाम-मात्र जन्म-सिद्ध चार-वर्णों को माना जाता था । शिवभारत में हमें अनेक स्थानों पर ऐसे वर्णन प्राप्त होते हैं जहाँ ब्राह्मण क्षत्रिय का कार्य करते हैं ।[3] इसेक अतिरिक्त निजाम की सेना में भी नृसिंह पिंगल नाम के ब्राह्मण का वर्णन प्राप्त होता है ।[4] आदिल की सेना में भी ढुंढि व रूस्तुम नाम के ब्राह्मण हैं ।[5] इस प्रकार के एक नहीं अनेक उदाहरण शिवभारत में मिलते हैं जिनमें ब्राह्मण क्षात्रकर्म करते हुए दृष्टिगत होते हैं ।[6] इस काल में ब्राह्मण क्षत्रिय की जीविका वाले थे, किन्तु फिर भी ब्राह्मण की हत्या करना पाप समझा जाता था । इसलिए शिवाजी अफजलखान के साथ आए हुए सैनिक को यह ब्राह्मण है इस प्रकार का पता चलने पर , नहीं मारते हैं ।[7]

---

1. शिवभारत, अध्याय 6, श्लो0 92, पृ0 18
2. शिवभारत, अध्याय 2, श्लो0 42-44, पृ0 6
3. उदारामश्चाग्रजन्मा ख्यात: क्षात्रेण कर्मणा ।
   ..... ॥
   शिवभारत, अध्याय 4, श्लो0 15, पृ0 10
4. शिवभारत, अध्याय 4, श्लो0 16, पृ0 10
5. शिवभारत, अध्याय 4 , श्लो0 31 , पृ0 11
6. शिवभारत, अध्याय13, श्लो0 6, पृ0 36, अध्याय 26, श्लो0 55, पृ0 78
7. शिवभारत, अध्याय 21, श्लो0 47-48, पृ0 61

इसके अतिरिक्त इस काल में ब्राह्मणों को यथायोग्य दान दिया जाता था तथा लोक जीवन में उनका ऊँचा स्थान था । इस काल में पौरोहित्य व दानग्रहण करना ब्राह्मणों के विशेषाधिकार थे । शिवाजी अफजलखान से भेंट के लिए जाते हुए पुरोहित को प्रणाम करते हैं तथा बछड़े के साथ स्वर्णयुक्त सींघ वाली गाय को ब्राह्मण को दान में देते हैं ।[1] इस प्रकार इस समय ब्राह्मणों की सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त था ।

क्षत्रियों का प्रमुख कार्य प्रजा-पालन, धर्म युद्ध, दान यज्ञ तथा विविध विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करना था । शिवभारत में हमें क्षत्रियों का इसी रूप में वर्णन प्राप्त होता है । इसमें अनेक स्थानों पर क्षत्रिय अपने क्षात्र-कर्म में लगे हुए दृष्टिगत होते हैं । जब आदिलशाह ने निजाम के प्रदेश पर आक्रमण किया तो उसकी सेना में अन्य जातीय सैनिकों के साथ ही साथ अनेक क्षत्रिय भी थे ।[2] इसके अतिरिक्त एक अन्य स्थान पर स्पष्ट रूप से क्षत्रियों का वर्णन मिलता है ।[3] शिवभारत में शिवाजी के लिए 'राजन्य' शब्द का प्रयोग हुआ है ।[4] तथा प्रभावली के राजा का वर्णन है जो कि क्षत्रिय है ।[5]

इस प्रकार शिवभारत में क्षत्रियों का अनेक स्थानों पर वर्णन प्राप्त होता है । इसमें क्षत्रिय केवल क्षात्र कर्म करते हुए दिखाई देते हैं । जो कि उनका प्रमुख कर्तव्य है ।

शिवभारत में हमें वैश्य व शूद्र का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं मिलता, अपितु एक स्थान पर चारों वर्णों का उल्लेख इस प्रकार प्राप्त होता है ।

---

1. शिवभारत, अध्याय 21 , श्लो0 14-16, पृ0 60
2. शिवभारत , अध्याय 4,श्लो0 26, पृ0 10
   शिवभारत, अध्याय4, श्लो0 31, पृ0 11
3. शिवभारत, अध्याय 25, श्लो0 44, पृ0 74
4. शिवभारत, अध्याय 28, श्लो0 77, पृ0 84
5. शिवभारत, अध्याय 31, श्लो0 51, पृ0 93

विप्राश्च बाहुजास्तद्दूरुजाश्च जघन्यजा: ।[1]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय वर्ण व्यवस्था थी । समाज में चारो वर्णो का अस्तित्व था । ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के साथ ही साथ शिवभारत में हमें अन्य जातियों का भी वर्णन मिलता है । जो सम्भवत: कर्म के आधार पर बन गई थी ।[2] इनके अतिरिक्त शूरसेन, हूण, देम, उण्ड्र, पुण्ड्र ललितथ इत्यादि जातियों का वर्णन मिलता है ।[3]

इस समय में धर्म की महत्ता अधिक बताई गई है । क्योंकि समस्त लोक तथा परलोक धर्म पर अवलाम्बित है । धर्म दोनों को देवत्व की प्रेरणा देता है तथा सांसारिक सुख भी धर्म पर आधारित है जिस प्रकार अग्नि की उष्णता उसका धर्म है तथा उष्णता के समाप्त हो जाने पर उसकी सत्ता नष्ट हो जाती है उसी प्रकार यदि धर्म की सत्ता नष्ट हो जायेगी तो संसार का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा । धर्म ईश्वर का रूप है । श्री कृष्ण ने गीता में स्वयं कहा है कि जब-जब धर्म की हानि होती है, वह स्वयं अवतार लेते हैं ।[4] इसी प्रकार शिवभारतकार ने चित्रित किया है 'जब पृथ्वी पर धर्म का अस्तित्व समाप्त होने लगा तो पृथ्वी का ब्रह्मा से धर्मरक्षार्थ प्रार्थना करता है तथा ब्रहम्मा का धर्म-रक्षा के लिए शाह जी के

---

1. शिवभारत, अध्याय 31, श्लो0 17, पृ0 92
2. शिवभारत, अध्याय 31 श्लो0 18-22 , पृ0 92
3. शिवभारत, अध्याय 6, श्लो0 74-75 , पृ0 18
4. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
   अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥
   परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
   धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे - युगे

   श्रीमद् भागवदगीता

पुत्र (शिवाजी) के रूप में विष्णु को भेजना ।[1] पृथ्वी ब्रह्मा को धर्म के ह्रास की बात बताती है ।[2] इस प्रकार शिवभारत में धर्म को महत्ता दी गई है । सर्वत्र धार्मिक प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । कवि ने देवी के आदेश से ही इस ग्रन्थ को लिखा तथा देवी की कृपा से ही वाणी के वैभव को प्राप्त किया ।[3] शिवाजी को तुलजा देवी की कृपा से प्राप्त राज्य वाला कहा है ।[4]

मालवर्मा तथा निजाम को अत्यधिक धार्मिक कहा है ।[5] तथामाल वर्मा के राज्य में होने वाले अनेक धार्मिक कार्यों का उल्लेख किया है ।[6]

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिवभारत में धार्मिक प्रवृत्ति का प्राधान्य है । सम्पूर्ण ग्रन्थ में कवि का धार्मिक दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई देता है ।

धर्म के साथ ही साथ शिवभारतकार ने अनेक प्रकार की विद्याओं का वर्णन किया है जो उस समय लोक जीवन में थीं । सम्पूर्ण शिवभारत में केवल शिवाजी की शिक्षा का वर्णन आया है । शिवाजी वेद, स्मृति, पुराण, दण्ड,नीति समस्त शास्त्र व काव्यों (रामायण, महाभारत आदि) के साथ व्यायाम, वस्तु विद्या ज्योतिष विद्या,गणित,धनुर्विद्या,चिकित्सा तथा सामुद्रिक विद्या तथा अनेक प्रकार के

---

1. शिवभारत, अध्याय 6, श्लो0 1, पृ0 15
2. नाऽहूयन्ते दिविषदो न हूयन्ते हुताशना: ।
   न वेदा अप्यधीयन्ते नाभ्यर्च्यन्ते द्विजातय: ॥
   न सत्राणि प्रवर्तन्ते नथैव च मखक्रिया: ।
   न दानानि विधीयन्ते विहीयन्ते व्रतानि च ॥
   शिवभारत, अध्याय 5,श्लो0 40-41, पृ0 14
3. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 6, पृ0 1
4. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 6, पृ0 1
5. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 56,59, पृ0 3
6. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 53-54, पृ0 3

शस्त्र संचालन में तथा विष का प्रभाव कम करने रत्न परीक्षण तथा अवधान विद्या (जैनों की विद्या) में प्रवीण हो गए ।[1] इससे स्पष्ट है कि शिवाजी के समय में इन सब विद्याओं का प्रचलन था ।

शिवाजी के समय में मुसलमानों का क्षत्रियराजाओं से संघर्ष चल रहा था उस समय क्षत्रिय नहीं के बराबर ही रह गए थे । मुस्लिम आक्रमणकारी क्षत्रिय राजाओं की शक्ति क्षीण कर उनके राज्यों को जीतकर अपना राज्य विस्तार करने में संलग्न थे साथ ही मुसलमान शासक हिन्दूराजाओं को सदा-सदा के लिए समाप्त करने के लिए उनके धर्म एवं संस्कृति को भी नष्ट करना चाहते थे । बाहरी आक्रमणों के फलस्वरूप राजनैतिक परिवर्त्तनों के साथ-साथ लोक जीवन पर भी उनका प्रभाव परिलक्षित होने लगा था । उस समय निरन्तर युद्ध होते रहते थे जिनका कवि ने अत्यन्त सजीव चित्रण किया है । उस समय चतुरंगी सेना का वर्णन मिलता है-पैदल, रथ अश्व एवं हस्ती ।[2]

इस समय में हिन्दू राजाओं के साथ मुस्लिम तथा मुस्लिम राजाओं के साथ हिन्दू दोनों जातियों के सैनिक रहते थे । जब निजाम व आदिलशाह का युद्ध हुआ तो उन दोनों की सेनाओं में हिन्दू व मुसलमान दोनों जातियों के सैनिक थे ।[3]

मुस्तफाखान ने जब शाह जी को पकड़ने की आज्ञा दी तो उस समय उसकी सेना में मुस्लिम सैनिकों के साथ ही साथ हिन्दू व ब्राह्मण सैनिक भी थे ।[4] इसी प्रकार शिवाजी की सेना में भी मुस्लिम सैनिक थे । जब शिवाजी अफ़ज़लखान

---

1. शिवभारत, अध्याय 10, श्लो0 34-39, पृ0 28
2. शिवभारत, अध्याय 2, श्लो0 4, पृ0 5
3. शिवभारत, अध्याय4, श्लो0 10-20, पृ0 10
4. शिवभारत, ध्याय 12, श्लो0 6,7 , पृ0 32

से भेंट के लिए दस सैनिको के साथ जाते हैं तो उन दस सैनिको में एक मुसलमान सैनिक भी था , जिसका नाम इब्राहीम था ।[1]

इस समय में मुख्य रूप से चतुरंगी सेना अर्थात् चार प्रकार की सेना का वर्णन प्राप्त होता है किन्तु एक स्थान पर छः प्रकार की सेना का वर्णन भी प्राप्त होता है ।[2] उस समय सेना का कोई निश्चित वेतन नहीं था । जो अधिक धन देता था सेना भी उसी के पास अधिक होती थी । तभी तो शिवाजी द्रव्यार्जन कर अधिक सेना एकत्रित करना चाहते हैं । ताकि शत्रु का मुकाबिला कर सके ।[3] इससे स्पष्ट हो जाता है कि सैनिक अधिक वेतन देने पर आकृष्ट होकर आते थे ।

इस समय सेना में पुरूषों के साथ-साथ स्त्री भी होती थी । मुगलों की सेना में पुरूषों के साथ ही साथ राजव्याघ्री नामक स्त्री सेनानी का भी वर्णन मिलता है ।[4] यह राजव्याघ्री उदयराम की पत्नी तथा जगत्जीवन की माता है ।[5] जब कारतलब (मुगल) की सेना को शिव की सेना चारो ओर से घेर लेती है, तब राजव्याघ्री वीर रस के आवेश में आ कर कारतलब को युद्ध बन्द करने का आदेश देती है ।[6]

इसके अतिरिक्त शिवभारत में वधू के रूप में भी नारी का वर्णन प्राप्त होता है । जिजु (शाह जी की पत्नी) सास श्वसुर की सेवा करती हुई अपने पति को अत्यधिक प्रिय हुई ।[7]

---

1. शिवभारत, अध्याय 21, श्लो0 70-72, पृ0 62
2. शिवभारत, अध्याय 26, श्लो0 26, पृ0 77
3. शिवभारत, अध्याय 28, श्लो0 34-35 , पृ0 82
4. शिवभारत, अध्याय 28, श्लो0 61, पृ0 83
5. शिवभारत, अध्याय 25, श्लो0 52, पृ0 75
6. शिवभारत, अध्याय 29, श्लो0 13, पृ0 85
7. शिवभारत, अध्याय 2, श्लो0 63 , पृ0 7

माता के रूप में भी स्त्री को अत्यधिक आदर प्राप्त हुआ । शिव-भारत में शिवाजी की माता का वर्णन प्राप्त होता है । जो वात्सल्ययुक्त होकर अपने बेटे शिवाजी से मिलने के लिए प्रणाल पर्वत पर जाने के लिए तैयार है ।[1] जहाँ पर शिवाजी को सिद्दि जोहर की सेना ने घेरा हुआ है ।

इतना ही नहीं वह कहती है कि मैं अपने बेटे को छुड़ाऊँगी तथा युद्ध में जोहर का सिर काट दूँगी ।[2] शिवाजी की माता अत्यधिक वीरता का प्रदर्शन करती है । वह अकेले ही जोहर के साथ युद्ध करने के लिए तैयार है ।[3] उसको अपने पुत्र (शिवाजी) के बिना सभी दिशाएं सूनी दिखाई देती हैं । तथा वह अपने पुत्र के बिना क्षण भर भी जिन्दा नहीं रह सकती है ।[4]

इस प्रकार शिवभारत में जहाँ हमें नारी के मातृत्व पक्ष का वर्णन प्राप्त होता है वहीं नारी के वैधव्य पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती है । देव के दुर्विपाक के कारण उसको वैधव्य दु:ख भी भोगना पड़ता है । शिवभारत में विधवा के रूप में उमा का वर्णन प्राप्त होता है । जो अपने पति मालवर्मा के देहान्त की सूचना सुन कर सूर्य से विरहित दिनश्री के समान लग रही थी ।[5]

इस समय का समाज सम्भवत: वेश्याओं से भी परिचित था । इसमें एक स्थान पर वेश्याओं के नृत्य का उल्लेख प्राप्त होता है ।[6] इससे यह स्पष्ट हो

---

1. शिवभारत, अध्याय 26, श्लो0 83, पृ0 76
2. शिवभारत, अध्याय 26, श्लो0 84, पृ0 76
3. शिवभारत, अध्याय 26, श्लो0 85, पृ0 76
4. शिवभारत, अध्याय 26, श्लो0 85-86, पृ0 76
5. शिवभारत, अध्याय 2 , श्लो0 6-7, पृ0 5
6. शिवभारत, अध्याय 1 , श्लो0 81, पृ0 4

जाना है कि उस समय वेश्याओं का अस्तित्व भी था । तथापि स्त्री को सम्मान-पूर्ण व अच्छा स्थान प्राप्त था । घर व बाहर दोनों स्थानों पर उसकी महत्ता दृष्टिगत होती है । स्त्री सेनापत्य करती हुई भी दिखाई देती है ।

उस समय लोक जीवन में शराब पीना निन्दित कार्य समझा जाता था इस ग्रन्थ में केवल निजाम के शराब पीने का वर्णन मिलता है उसको दुर्बुद्धि तथा अव्यवस्थित चित्त वाला कहा है ।[1] दान की महिमा सर्वत्र थी । मालवर्मा से लेकर शिवाजी तक सभी को अत्यधिक दानी कहा गया है । मालवर्मा के राज्य में सदैव महान दान होते रहते थे ।[2] इसके अतिरिक्त शाह जी के जन्म के अवसर पर माल वर्मा ने अत्यधिक दान दिया[3] इसका वर्णन मिलता है ।

शिवाजी के जन्म पर शाह जी के भाई शम्भु ने दान में गाय,सोना, हाथी, तथा रत्न इत्यादि दिये[4] इसी प्रकार शिवाजी को भी दानी कहा है जब शिवाजी अफ़ज़लखान से भेंट के लिए जाते हैं तो पहले बच्चे के साथ सोने के सींगवाली

---

1. शिवभारत, अध्याय 8, श्लो0 25, पृ0 22
2. अग्निहोत्राणि सत्राणि यज्ञः सुबहुदक्षिणाः ।
   महादानान्यपि तथा राष्ट्रे तस्य सदाऽभवन् ॥
   शिवभारत अध्याय 1, श्लो0 53, पृ0 3
3. महामुक्ताः प्रवालानि रत्नालंकरणानि च ।
   स्वर्णानि स्वर्णवासांसि गास्तुरंगान गजानपि ॥
   जनाय याचमानाय ददानः स तदा प्रभुः ।
   .....॥
   शिवभारत अध्याय 1, श्लो0 84-85, पृ0 4
4. शिवभारत अध्याय 6, श्लो0 95, पृ0 19

गाय को ब्राह्मण को दान में देते हैं ।[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि ने सूर्यवंशी राजाओं को अत्यधिक दानी दिखाया है ।

शिवभारत में हिन्दू समाज के साथ ही साथ मुस्लिम व क्रिश्चन समाज का भी वर्णन प्राप्त होता है । 'शिवभारत' विशेष रूप से शिवाजी पर आधारित होने के कारण उसमें हिन्दू समाज का अधिक वर्णन प्राप्त होना स्वाभाविक ही है, किन्तु गौण रूप से इसमें मुस्लिम व ईसाई समाज का भी कुछ वर्णन प्राप्त होता है ।

उत्तर तथा दक्षिण के मुसलमानों को अलग-अलग चित्रित किया गया है । उत्तर के मुसलमानों को नाम्नमुख [2] तथा दक्षिण के मुसलमानों को श्याममुख[3] वाला कहा गया है । उत्तर तथा दक्षिण के मुसलमानों में राज्य के लिए लगातार युद्ध होते रहते थे । शिवभारत में केवल इनके युद्धों का वर्णन मिलता है । मुस्लिम समाज के विषय में अधिक जानकारी नहीं मिलती है । किन्तु इनमें उत्तर के मुसलमानों को म्लेच्छ कहा गया है जबकि दक्षिण के मुसलमानों के लिए ऐसे अपशब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है । तथा दक्षिण के निजाम शाह को तो धर्मात्मा कहा गया है ।[4] इसका मुख्य कारण यह था कि सम्भवत: दक्षिण के मुसलमान हिन्दू-समाज में अत्यधिक घुलमिल गए थे तथा वे अत्याचार भी नहीं करते थे, इसीलिए उस काल के समाज में दक्षिण के मुसलमानों के प्रति उदार दृष्टिकोण था ।

इसके अतिरिक्त फिरंगी सम्भवत: डच, पोर्तुगीज़ व अंग्रेज इनको यवनों से भी नीच प्रवृत्ति का कहा है ।[5]

---

1. शिवभारत अध्याय 21, श्लो0 15-16, पृ0 60
2. शिवभारत अध्याय 4, श्लो0 8-9, पृ0 10
3. शिवभारत, अध्याय 4, श्लो0 49, पृ0 11
4. शिवभारत, अध्याय 1, श्लो0 59, पृ0 3
5. शिवभारत अध्याय 30, श्लो0 2, पृ0 89

उस समय मुसलमानों का राज्य था , उनके राज्यकाल में हिन्दू जनता पर कुछ अत्याचार अवश्यमेव होते होंगे तभी तो शिवभारत के प्रारम्भ में ही कवि ने पृथ्वी के मुख से इस प्रकार कहलवाया है, पृथ्वी ब्रह्मा से कहती है कि म्लेच्छ रूपधारी राक्षस मुझे अत्यधिक दुखी कर रहे हैं ।[1]

इतना ही नहीं पृथ्वी ब्रह्म्मा से कहती है कि दुष्ट यवन सब जगह फैले हुए हैं । आजकल न वेदों का अध्ययन हो रहा है, न यज्ञ हो रहे हैं । इस प्रकार सर्वत्र धर्म का ह्रास हो रहा है तथा म्लेच्छ धर्म अत्यधिक बढ़ रहा है ।[2] पृथ्वी म्लेच्छों से अत्यधिक भयभीत है । वह ब्रह्म्मा से कहती है कि 'म्लेच्छवशवर्तिनी' मुझ पर हंसते हैं ।[3] इस प्रकार पृथ्वी ब्रह्म्मा से कहती है । ब्रह्म्मा पृथ्वी से शिवावतार के विषय में बताते हुए कहते हैं कि जिष्णु का पुत्र (शिवाजी) शीघ्र ही तुम्हारे कष्टों को दूर करेगा तथा पुन: धर्म की स्थापना करेगा । यवनों का अन्त कर देवताओं का पालन करेगा ।[4] शिवाजी को विष्णु का अवतार कहा है ।[5] जो कि यवनों के अत्याचार को

---

1. त्वया विरचितं विश्वं विरिञ्चे यच्चराचरम् ।
   दनुजैर्म्लेच्छनामभि: त्वदद्य बत सीदति ॥
   ये हता: प्रथमं देवैर्दुर्मदास्त्रिदशद्विष: ।
   ते मां तुदन्ति तिष्ठेऽस्मिन्नुपेत्य म्लेच्छरूपताम् ॥
   शिवभारत अध्याय 5, श्लो0 36-37, पृ0 14
2. शिवभारत अध्याय 5, श्लो0 39-42 , पृ0 14
3. शिवभारत अध्याय 2, श्लो0 43-44 , पृ0 14
4. शिवभारत अध्याय 5, श्लो0 54-55 , पृ0 14
5. अथो विविक्षुस्तत्कृच्छ्रं स्वयं योगेश्वरो हरि: ।
   शाहपत्न्यै प्रसन्नात्मा स्वमात्मानमदर्शयत् ॥
   शिवभारत, अध्याय 6, श्लो0 1 , पृ0 15

समाप्त करने के लिए ही इस पृथ्वी पर अवतीर्ण हुआ । जब अफ़ज़लखान शिवाजी के साथ युद्ध के लिए आता है तो उस समय शिवाजी कहते हैं कि जिसने तुलजापुर वाली देवी का अपमान किया है ऐसा वह यवन जो पाप का पर्वत है तथा सम्पूर्ण वर्णधर्म पद्धति को अव्यवस्थित करने वाला है ।[1] इतना ही शिवाजी अफ़ज़लखान को सभी धर्मों का निषेध करने वाला तथा अधर्म को फैलाने वाला कहते हैं ।[2] इससे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय मुस्लिम शासक हिन्दू प्रजा पर अत्याचार करते थे ।

अस समय ब्राह्मणों की स्थिति अच्छी नहीं थी । अत: धर्म की स्थापना के लिए ब्राह्मणों व देवताओं के पालन के लिए शिवाजी को विष्णु के रूप में माना जे । तभी तो शिवाजी कहते हैं :

अत: सर्वस्य लोकस्य मूलमेते द्विजातय: ।
पालनीया: प्रयत्नेन पूजनीयाश्च सर्वदा ॥[3]

शिवभारत में मुस्लिम समाज के अतिरिक्त पश्चिम में समुद्र के किनारे बसे हुए कुछ यूरोपियन लोगों का भी उल्लेख मिलता है जिनको कवि ने अग्नियन्त्र चलाने में कुशल, प्राकार बना कर युद्ध करने वाले तथा अत्यधिक धनवान कहा -

---

1. ..... ।
   अवाज्ञायत वै देवी तुलजापुरवासिनी ॥
   य: सदैवानस्तिदयो रोषणो राशिरंहसाम् ।
   द्विजानक्षिगतानङ्गितानिव जिघांसति ॥
   पर्वत: पातकस्येव सर्वत: सुमदोद्धत : ।
   पद्धतिं वर्णधर्माणां रोद्धुं यो हि व्यवस्थित: ॥
   शिवभारत अध्याय 18, श्लो0 19-21 , पृ0 53
2. शिवभारत, अध्याय 18, श्लो0 22 , पृ0 53
3. शिवभारत, अध्याय 18, श्लो0 26, पृ0 53

है ।[1] ये (अंग्रेज लोग) नौका बनाने व चलाने में कुशल तथा अनेक यन्त्रों में कुशल थे । इनको नीच कहा है । शिवाजी ने इनकी अपनी सेना द्वारा जीतकर इनका सम्पूर्ण धन ले लिया ।[2]

इसके अतिरिक्त शिवभारत में मुसलमानों के लिए 'अविद्ध' (जिनके कान छेदे नहीं हैं) शब्द का प्रयोग किया गया है । शिवाजी ने अविद्धों (मुसलमानों) की सेना को भगाकर दाल्यपुर तथा क्वित्रपुलिन को अपने हाथ में ले लिया अर्थात् जीत लिया[3] इतना ही नहीं शिवाजी ने जब राजपुर को जीतकर वहाँ की पृथ्वी को खुदवाकर उसमें से सम्पूर्ण धन निकलवा लिया तो इसके विषय में कवि का कथन है कि ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः शिवाजी ने वहाँ की भूमि को, जो बहुत समय से यवनों के स्पर्श से अपवित्र हो गई थी, पवित्र कर दिया ।[4] क्योंकि वहाँ पर बहुत समय से अंग्रेजों का शासन था । इस प्रकार इन वर्णनों के द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि उस समय के मुस्लिम शासन के अत्याचारों से त्रस्त होकर ही कवि ने इस प्रकार का वर्णन किया है । हम देखते हैं कि शिवभारत में हिन्दू समाज के साथ

---

1. अथाग्नियन्त्रसन्धानविशेषोद्यविक्रमान् ।
   प्राकारयुद्धकुशलानुदध्या जितधनेश्वरान् ॥
   शिवभारत अध्याय 30, श्लो0 । , पृ0 88
2. शिवभारत अध्याय 30, श्लो0 3-4, पृ0 89
3. विद्राव्याविद्धपृतना द्रुतं दाल्यपुरं जितम् ।
   तथैव क्वित्रपुलिनं पुरं निजकरे कृतम् ॥
   शिवभारत अध्याय 30, श्लो0 27, पृ0 89
4. चिरस्थ्यवनस्पर्शवशादशुचिनां गता ।
   सनिक्षेपां स तत्र क्ष्मां म्लेच्छैः किमशोधयत् ॥
   शिवभारत अध्याय 30, श्लो0 10, पृ0 89

ही साथ मुसलमान व ईसाईयों का भी वर्णन मिलता है । शिवाजी ने अंग्रेजों के खतरे को अच्छी तरह पहचाना था ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस समय निरन्तर हो रहे युद्धों के कारण लोक जीवन में अस्थिरता आ गई थी । फिर भी इस ग्रन्थ के द्वारा हमें उस समय के कुछ रीति-रिवाज़, समाज में प्रचलित विश्वास आदि की कुछ जानकारी अवश्य प्राप्त होती है । जैसे लोग शकुन अपशकुन को बहुत मानते थे फलित ज्योतिष में भी तत्कालीन व्यक्तियों की आस्था थी ।

नारियों की स्थिति अच्छी थी घर तथा बाहर उनको सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था किन्तु फिर भी स्त्रियाँ वेश्याएं भी थीं । ये भी वर्णन प्राप्त होता है । वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था । चारो वर्णो का उल्लेख मिलता है किन्तु उसका पालन दृढ़ता से नहीं किया जाता था । यही कारण है कि उस समय ब्राह्मण युद्ध क्षेत्र में क्षात्रकर्म करते हुए भी दिखाई देते हैं । इसके अतिरिक्त सेना में हिन्दू व मुसलमान दोनों ही जाति के सैनिकों का उल्लेख मिलता है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय हिन्दू मुस्लिम का भेदभाव नहीं था ।

xx=xx